शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 दिसम्बर 2013

दलित सशक्तिकरण और गौतम बुद्ध

नानकचन्द, शोधार्थी
इतिहास और सभ्यता विभाग
गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय
ग्रेटर नोएडा, उ.प्र., भारत

शोध संक्षेप

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि गौतम बुद्ध एक महान समाज सुधरक थे, क्योंकि जिस समय वर्ण व्यवस्था के आधार पर दकियानूसी समाज द्वारा दलित समुदाय की अस्मिता पर प्रहार किया जा रहा था तब गौतम बुद्ध ही थे, जिन्होंने इस भ्रमित समुदाय को समानता का मार्ग दिखाया। यह सर्वविदित है कि गौतम बुद्ध ने वर्ण व्यवस्था के तिलिस्म को तोडकर दलित समुदाय को समाज में सामाजिक समानता दिलाने में अथक प्रयास किये। गौतम बुद्ध जातिमूलक और जातिविहीन समाज की स्थापना करना चाहते थे, क्योंकि उनके सिद्धांत समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व की भावना पर आधारित थे । इस शोध पत्र के द्वारा यह प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है कि दलित सशक्तिरण में गौतम बुद्ध के विचारों और सिद्धांतों की प्रासंगिकता आज भी है।

प्रस्तावना

भारत विभिन्नताओं का देश है। भारत में विभिन्न जातियों और उपजातियों के लोग रहते हैं, लेकिन इन्हीं जातियों के कारण एक विशेष समुदाय को बिना किसी कारण के हजारों वर्षो से दबाया और कुचला गया है, जिसकी जिम्मेदार है जाति व्यवस्था। बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार भारत में ही नहीं अपितु बाहर भी दूर-दूर तक हुआ। भारत में बौद्धों का धर्म साम्राज्य अनेक सदियों तक रहा। मनुस्मृति, धर्मशास्त्रों और बौधायन सूत्रों के आधार पर यह विदित होता है कि दलितों को विशेषाधिकारों से वंचित रखा गया। यह प्रश्न विचारणीय है कि आखिर क्यों इसी समुदाय को मानवाधिकारों से वंचित रखा गया। गौतम बुद्ध ने कहा था कि मनुष्य की पहचान जन्म के आधर पर नहीं अपितु उसके कर्म के आधार पर करनी चाहिए। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में ब्राहाण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों के लिए पृथक बस्तियों की स्थापना की, उसी प्रकार वराहमिहिर ने वृहत्संहिता में भी चारों वर्णों के लिए विभिन्न बस्तियों की व्यवस्था की। न्याय संहिता में कहा गया है कि ब्राहाण का मूल्यांकन तुला से, क्षत्रिय की अग्नि से, वैश्य की जल से और शूद्र का मूल्यांकन विष से करना चाहिए।1

महाभारत के शांतिपर्व में भी बताया गया है कि यदि कोई शूद्र ब्राहमण की हत्या करे तो उसे देश निकाला दिया जाये। पफाहान के वर्णन से विदित होता है कि भारतीय समाज में अछूतों और चांडालों की स्थिति दयनीय और अपमानजनक थी और उन्हें अपवित्र, असत्यवादी और निर्लज्ज कहा गया है। इनका मुख्य व्यवसाय जंगली जानवरों का शिकार करना, मछली पकडना और मुर्दघाटों की रखवाली करना बताया गया है।2

यहां यह कहना हास्यापद नहीं होगा कि यह कैसा नियम है किसी विशेष वर्ग पर इन रुढ़ीवादी सिद्धांतों को थोप दिया जाए। गौतम बुद्ध ने इन्हीं विषमताओं और असमानताओं का निराकरण करने के लिए आन्दोलन चलाया और मनुवादियों को आभास कराया कि सभी मनुष्य समान हैं। गौतम बुद्ध मानते हंै कि समानता का अधिकार जन्मसिद्ध अधिकार है, इसीलिए उन्होंने वर्ण व्यवस्था को कड़ी चुनौती दी, क्योंकि यह व्यवस्था मनुष्य के बीच अंतर पैदा करती है।

गौतम बुद्ध ने मध्यम मार्ग अपनाया और कहा कि इस मध्यम मार्ग के आठ आर्य अंग है। 1 सम्यक दृष्टि, 2 सम्यक संकल्प, 3 सम्यक वचन, 4 सम्यक कर्म, 5 सम्यक आजीविका, 6 सम्यक प्रयत्न, 7 सम्यक विचार, 8 सम्यक ध्यान। अगर दलित उनके इन अष्टांगिक मार्गो को अपने जीवन में निहित कर लें तो अपने जीवन को प्रभावशाली बना सकते हैं, लेकिन वर्तमान में भी दलित कभी संतोषी माता में, कभी सांई बाबा में, कभी विष्णु और कभी कृष्ण में अपना भविष्य देखता है। यह कहना भी गलत नहीं होगा कि भारतीय दलित अपनी कथनी और करनी के खुद जिम्मेदार हैं। दलित समुदाय को अपना विकास करने के लिए गौतम बुद्ध के मध्यम मार्ग को अपनाना ही होगा। गौतम बुद्ध ने चार आर्य सत्य भी बताये हैं जो समाज की असलियत को उजागर करते हैं। 1 दुःख, 2 दुःख समुदय, 3 दुःख निरोध, 4 दुःख कारण। गौतम बुद्ध बताते हैं कि जन्म भी दुःख है, बुढ़ापा भी दुःख है, मरण, शोक और मन की खिन्नता भी दुःख है। दुःख का समुदय तृष्णा है। इंद्रियों के जितने विषय हैं, उनके साथ संपर्क तृष्णा को उत्पन्न करता है। तृष्णा का त्याग कर देने से दुःख का निरोध हो जाता है।3 दलित समाज को उनके इन आर्य सत्य का मूल्यांकन करने की जरुरत है।

गौतम बुद्ध छुआछूत के कटट्र विरोधी थे। एक बार बासत्थ और भारद्वाज बुद्ध के पास गये और बोले महामना कोई व्यक्ति जन्म से ब्राह्मण होता है या कर्म से। बुद्ध बोले प्रिय मनुष्य ! जो गाय चराता है उसे हम चरवाहा कहेंगे, जो व्यापार करता है उसे व्यापारी कहेंगे, जो आदमी दूसरों की नौकरी करता है उसे अनुचर कहेंगे और किसी विशेष के जन्म लेने पर मै किसी को ब्राह्मण नहीं कहूंगा। जिस मनुष्य ने अपने सब बंधन काट दिये हैं, अपने को सब लगावों से पृथक करके भी जो विचलित नहीं होता, मैं उसी को ब्राह्मण कहूंगा बल्कि मनुष्य अपने सद्कर्मो से ब्राह्मण बनता है चाहे वह किसी भी वर्ग का हो। अगर गौतम बुद्ध के ये विचार दलित समाज अपनाये तो दलित समाज के लिए प्रेरणास्रोत साबित हो सकते हैं। दलित समाज को बुद्ध की तरह विस्तृत सोच सृजन करनी होगी। दलितों को सृजनशील बनना होगा जिससे वे दूसरे समाज पर आश्रित न होना पडे, उसके लिए जरूरत है अथक परिश्रम की और मेहनत की।

गौतम बुद्ध अहिंसा के पक्षधर थे। बुद्ध ने लोगों को अपने उपदेशों के द्वारा समझाया कि जीवों और जानवरों की बलि देना अनुचित है। उन्होंने बताया कि ये वेदपाठ और यज्ञ अनुष्ठान निर्रथक है और उनका मानना था कि जब तक मनुष्य का चरित्रा शुद्ध नहीं होगा, धन की इच्छा दूर नहीं होगी, काम, क्रोध और मोह पर विजय नहीं होगी तब तक ये यज्ञ अनुष्ठान निरर्थक और निर्जीव

है। महात्मा बुद्ध कहते हैं कि अगर मनुष्य किसी की हिंसा नहीं करता, शरीर की प्रवृत्तियों पर संयम कर पापों से बचता है, वह वास्तव में निर्वाण प्राप्त कर सकता है। कहने का तात्पर्य है कि गौतम बुद्ध के विचार और सिद्धांत बेजोड हैं।

भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी गौतम बुद्ध की अमिट छाप दिखाई पडती है। उन्होंने सभी वर्ग के लोगों के जीवन को सुखमय बनाने के लिए विभिन्न सिद्धांतों का अनुसरण कराया। गौतम बुद्ध के वक्तव्य में कहें तो बौद्धकालीन समय में हिंदू समाज अनेक जातियों में प्रस्फुटित था जिसमें दलित समुदाय को मुख्य धरा से बाहर रखा गया। यह शोषित वर्ग सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक अध्किारों से उपेक्षित था। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि बुद्ध ब्राह्मण तत्वों के विरोध्ी थे लेकिन यह भी याद रखने योग्य है कि उनके अनुयायियों में ब्राह्मणों की संख्या अत्यधिक थी। गौतम बुद्ध ने समानता के सिद्धांत का प्रत्यक्ष सर्मथन किया। यही कारण है कि शोषित, उत्पीडित और भ्रमित समाज दलित के उत्थान में गौतम बुद्ध के विचारों ने औषधी के रुप में काम किया। उनके तर्कशील विचार और सिंद्धांत शोषित समाज के उत्थान में सहायक सिद्ध हुए है। लेकिन यह कहना भी उचित होगा कि दलित हिंदू धर्म के चर्तुवर्णीय सिद्धांत पर आधारित धार्मिक और सामाजिक भेदभाव के शिकार हैं।

ब्राह्मण अश्वलायन ने गौतम बुद्ध के पास जाकर विनती की कि केवल ब्राह्मण ही ब्रहा के पुत्र हैं क्योंकि वे उनके मुख से उत्पन्न हुए हैं और वे ही वास्तव में ब्रह्मा के उत्तराधिकारी हैं। गौतम बुद्ध ने अश्वलायन को उत्तर देते हुए समझाया कि ब्राह्मणों की महिलाएं गर्भिणी योनि से प्रसव करती हैं और बच्चों को दूध पिलाती देखी जाती हैं। ब्राह्मणों का जन्म अन्य लोगों के समान होता है। यह कहना न्यायसंगत नहीं है कि वे ही ब्रह्मा के उत्तराधिकारी हैं। गौतम बुद्ध के कहने का तात्पर्य था कि समाज में जन्म के आधर पर कोई उच्च और निम्न नहीं है।1

गौतम बुद्ध के विचार इतने प्रासंगिक हैं कि दलित समाज अगर आत्मसात कर ले तो समाज में निहित जाति के जहर को मिटाने में अहम भूमिका अदा कर सकते हैं। दलित समुदाय भी अनेक उपजातियों में विभाजित है। वाल्मीकि जाटव के साथ भोजन और वैवाहिक सम्बन्ध नहीं रखता है और जाटव कोरी के साथ भोजन और वैवाहिक सम्बन्ध नहीं रखता है। अगर दलित समाज गौतम बुद्ध के द्वारा बताये गये मार्ग का अनुसरण कर लें तो अवश्य ही दलित सशक्तिकरण में अपनी भागीदारी निभा सकते हैं। यह कहना संदेहपूर्ण नहीं है कि डॉ. अम्बेडकर ने दलित उपजातियों का एकीकरण करने और शोषण से बचाने के लिए बौद्ध धर्म ग्रहण किया था लेकिन अगर वास्तवितक अध्ययन किया जायें तो दलित समाज आज भी आपस में भेदभावपूर्ण का रवैया अपनाये हुए है।

डॉ. अम्बेडकर मानते हैं कि दलित समाज को ऐसा दृष्टिकोण अपनाना चाहिए जैसा गौतम बुद्ध ने अपनाया था। आपको संघर्ष करना होगा जैसा गुरु नानक ने किया था। आपको शास्त्रों की उपेक्षा ही नहीं करनी होगी बल्कि उनकी सत्ता को अस्वीकार करना होगा क्योंकि गौतम बुद्ध और गुरु नानकदेव जी ने उनकी रुढ़ीवादी सत्ता

को अस्वीकार कर दिया था। आपको हिंदूओं से यह कहने का साहस होना चाहिए कि दोष उनके धर्म का है।4 कहने का आशय यह है कि दलित समाज वर्तमान में भी सामाजिक समानता प्राप्त नहीं कर पाया है लेकिन यह कहना भी गलत नहीं होगा कि दलित समाज का विकास निरंतर हो रहा है।

गुजरात के हदमतिया गांव में दलित परिवारों को राम मंदिर में प्रवेश करने की अनुमति नहीं मिलती है, गांव के तालाब से पानी लेने की अनुमति नहीं है। दलित परिवारों का कहना है कि मानसिक अस्पृश्यता आज भी कायम है।5 दलितों को बौद्ध धर्म को अपनाने में किसी प्रकार का संकोच नहीं होना चाहिए क्योंकि दलितों को ऐसे धर्म की आवश्यकता है जिसमें बराबरी का सम्मान मिले। बौद्ध धर्म जीवन जीने की राह है और दलितों के उन्नति का मार्ग है।

वर्तमान युग में दलितों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में भी बदलाव आया है। लेकिन इस युग में भी बुद्ध के सिद्धांत बहुत ही प्रासंगिक दिखाई पडते हैं। अगर माना जायें तो धन कमाने का उद्देश्य पारिवारिक और सामाजिक जिम्मेदारियों को निभाने के लिए होना चाहिए, न कि धन को एकत्रित करने के लिए। आधुनिक दलित समाज को सामाजिक समानता और शान्ति स्थापित करने के लिए सम्यक आजीविका से संबंधित अर्थनीति का मूल्यांकन केवल व्यक्तिगत स्तर पर ही नहीं करना चाहिए बल्कि इसके साथ-साथ देश के अर्थशास्त्रियों को इस प्रकार की नीतियों का सृजन करके उन्हें दलितों के जनहित के लिए लागू किया जाना चाहिए। डॉ. अम्बेडकर का मानना है कि अगर दलित समाज गौतम बुद्ध के शील, समाधि, प्रज्ञा, करुणा, दया, अहिंसा, दान, ध्यान, मैत्री के विचारों को आत्मसात कर ले तो निश्चित तौर पर समाज में अपनी प्रतिष्ठा स्थापित कर सकते हैं।

हरबर्ट माक्र्यूस के शब्दों में कहें तो दलित चेतना एक सांस्कृतिक चेतना हं और इसीलिए विद्रोही भी है। यदि भारत के परिप्रेक्ष्य में विचार करें तो डॉ. अम्बेडकर ने दलितों के सामाजिक और राजनैतिक ढ़ाचे में सुधर लाने हेतु जो सिद्धांत और तरीके अपनाये उनसे भारत में दलित चेतना का निर्माण हुआ। डॉ. अलेक्जेन्डर जेनर ने चेचक और जीवाणुओं को जड़ से समाप्त करने के लिए वैक्सीन का इस्तेमाल किया उसी तरह डॉ. अम्बेडकर ने भारतीय समाज में अभिशप्त जाति व्यवस्था और अस्पृश्यता की बीमारी को समाप्त करने के लिए वैक्सीन के रूप में शिक्षा को अपनाया।

सन्दर्भ

1 झा, द्विजेंद्रनारायण और कृष्णमोहन श्रीमाली, प्राचीन भारत का इतिहास, दिल्ली विश्वविद्यालयः हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, 1981, पृष्ठ- 31

2 वहीं पृष्ठ- 312

3 विद्यालंकार, सत्यकेतु, प्राचीन भारत, नई दिल्लीः सरस्वती सदन, 1994, पृष्ठ-143

4 सराओं, के.टी.एस, बौद्ध धर्मः उद्वव, स्वरुप और पतन, दिल्लीः दिल्ली विश्वविद्यालय, 2004, पृष्ठ-153-154

5 बाबा साहेब, डॉ. अम्बेडकर, संपूर्ण वाड़मय खंड-1, संपादित डॉ. अम्बेडकर प्रतिष्ठान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, दिल्ली, 1994

6 हजामत और हक के लिए बुद्ध की शरण में, जनसत्ताः दिल्ली, 22 अक्टूबर, 2013